उपसंहार

उपसंहार

मोहनदास नैमिशराय जी का व्यक्तित्व को देखने पर हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि नैमिशराय जी का जन्म ५ सितंबर, १९४२ में मेरठ शहर में हुआ | उनका जन्म एक गरीब परिवार में चमार जाति में हुआ था | उनको अपनी माँ का अभाव रहा है | लेकिन ताई माँ ने उसकी जगह लेने का प्रयास किया है | उन्हें बचपन में प्यार से ज्यादा सहानुभूति मिलती थी | उनका बचपन विषम परिस्थितियों में बीता है उनमें शिक्षा के प्रति बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धिमत्ता परिलक्षित होती है | उनको अध्यापकों की प्रताड़ना एवं जुल्म का सामना करते हुए शिक्षा पूरी करनी पड़ी |

साहित्यकार नैमिशराय जी के व्यक्तित्व की तरह कृतित्व भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अतुलनीय है | उनका पूरा साहित्य अनुभूतिप्रक एवं यथार्थवादी है | वे अनेक पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए हैं | उन्होंने सामाजिक गतिविधियाँ, शैक्षणिक गतिविधियाँ, शोध एवं पाठ्यपुस्तकों में बहुमोल योगदान दिया है | उन्होंने अपने साहित्य में दलितों की समस्याओं को उजागर किया है तथा उनमें चेतना जगाने का प्रयास किया है | उन्होंने विभिन्न संम्मेलनों में शोध पत्रों को प्रस्तुत किया है |

अत: कहना सही होगा कि शोषित, पीड़ित, उपेक्षित तथा मनुष्य होते हुए भी जानवरों से भी बदतर जिंदगी जिनेवाले दलितों को वाणी देने का प्रयास श्रेष्ठ साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय ने किया है | वे अपने साहित्य के माध्यम से दलितों को न्याय देने में पूरी तरह से सफल हुए हैं |

मोहनदास नैमिशराय जी ने 'मुक्तिपर्व' के माध्यम से संघर्षशील दलित परिवार का चित्रण करके दलितों में चेतना जागृत करने का प्रयास किया है | आजादी मिलने पर भी दलितों को न्याय नहीं मिलता | नवाब साहब, जमींदार, जागीरदार दलितों को स्वातंत्र्य नहीं देना चाहते | उन्हें देश और समाज को मिली आजादी सुहाती नहीं, क्योंकि दलित देश आजाद होने

पर जागृत हो गया था | लेखक ने शिक्षा के माध्यम से दलितों की समस्याओं को हल करने का संदेश दिया है | जो डॉ.अम्बेड़कर के गुलामी से मुक्ति हेतु मूलमंत्र के विचारों को उजागर करते हैं |

'मुक्तिपर्व'उपन्यास का नायक बंसी अपने अधिकारों के प्रति सजग है | वह नवाब साहब की हवेली पर गुलामी करता था | उसने जानवरों से बदतर जिंदगी गुजारी है, लेकिन देश आजाद होने से वह अपने अधिकारों को पहचानने लगा था | वह नवाब साहब की गुलामी ठुकरा देता है | बंसी से प्रेरित होकर अन्य दलित स्त्रियों-पुरूषों ने गुलामी ठुकरा दी थी | प्राचीन काल से दलितों के जख्मों को सवर्ण कुरेदता आया है | लेकिन देश आजाद होने से दलित गुलामी का विरोध करता है | बंसी रूढ़ि तथा परंपरा की जंजीरें तोड़ना चाहता है | इसलिए वह लड़के के नामकरण संस्कार के समय पंड़ित को घर से बाहर निकाल देता है | आजादी के बाद दलितों की अस्मिता और पहचान उभरने लगी थी |

नैमिशराय जी ने इस उपन्यास में शिक्षा का महात्त्व स्पष्ट किया है | बंसी अपने लड़के सुनीत को पढ़ाता है, उस पर अच्छे संस्कार करता है | लेखक ने मंदिर प्रवेश की समस्या पर भी प्रकाश ड़ाता है | दलितों को नैसर्गिक मुफ्त का पानी भी नसीब नहीं था | उनको नलकी से पानी पीना पड़ता था | लेकिन सुनीत शिक्षा के माध्यम से समाज की यथार्थता जान गया था | वह तथा अन्य दलित प्याऊवाले के प्रति विद्रोह प्रकट करते हैं | आजादी के बाद भी लोग जातियों की बात करते हैं | उनका उपहास करते हैं | उने जाति का नाम लेकर जलील करते हैं | सुनीत अध्यापक की बात का जवाब अपने तरिके से देना चाहता है | इसलिए वह कठोर मेहनत करता है | अंतत: सुनीत की मेहनत रंग लाती है | वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता है |

अंत में कहना गलत न होगा कि डॉ.अम्बेड़कर जी ने 'शिक्षित बनो, संगठित हो जाओ एवं संघर्ष करो' का मूलमंत्र दलितों को दिया है | उसी से प्रेरित होकर आज दलित शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहा है | वे अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधविश्वास को जड़ से उखड़ फेंकना चाहता है | दलित गुलामी को ठुकराकर अपने अधिकारों के प्रति जागृत

हो गया है | मोहनदास नैमिशराय जी का 'मुक्तिपर्व' उपन्यास दलित समाज को प्रेरणादायी होगा इसमें संदेह नहीं है |

'वीरांगना झलकारी बाई' में मोहनदास नैमिशराय जी ने १८५७ के उन स्वतंत्रता सेनानियों को याद दिलाया है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी | झलकारी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी | उसने स्वातंत्र संग्राम में एक घायल सिंहनी की भाँति अंग्रेजों का सामना किया | झलकारी बाई दलित-पिछड़े समाज में थी और वे निस्वार्थ भाव से देश-सेवा में रही थी | तत्कालीन समय में जातियाँ हाशिये पर थी, पर उन्होंने देश की विपत्ती में निस्वार्थ भाव से जान की परवाह किए बगैर संघर्ष किया था | वीरांगना झलकारी बाई स्वतंत्रता सेनानियों की उसी श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी रही है | लेकिन दुखद बात यह कि जाति विशेष के चष्माधारी इतिहासकारों, साहित्यकारों और पत्रकारों में से किसी ने भी दलित समाज की उस वीरांगना झलकारी बाई की खबर नहीं ली थी |

भोजला गाँव में जन्मी झलकारी ने स्वातंत्र्य संग्राम में बहुमोल योगदान दिया | झलकारी ने बचपन में बाघ मार दिया था | लेकिन ऊँची जातियों के लोग उसे आसानी से स्वीकार नहीं करते | वह उसके प्रति ईर्ष्या करते हैं | तत्कालीन समाज जातीयता के आधार पर विभक्त था | झलकारी का गौरव करने के बजाय वे उसका उपहास करते हैं | हिंदू समाज में जाति विरासत में दलितों को सहनी पड़ती थी | तथाकथित सवर्ण दलितों की परछाइयों से भी दूर रहते थे | दलितों को जान्वरों से बदतर जिंदगी मिली थी | दलित समाज के लोग मजबूर थे | बोलने पर उन्हें दंड़ सहना पड़ता था | दुनिया के विधानों से अलग विधान थे इस धरती पर | मोहनदास नैमिशराय जी ने इन प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है |

तत्कालीन समाज में महिलाओं में हथियार चलाने की कहाँ परंपरा थी | लेकिन झाँसी की रानी ने इसका दर्शन उलट दिया था | उन्होंने दलित समाज की एक महिला को महिला सेना का कमांड़र बना दिया था | दलित समाज के लोग साहसी थे और बहादुर भी, लेकिन उनकी पहचान बने, ऐसा सवर्ण समाज नहीं चाहता था | झलकारी बचपन से ही वीर और साहसी थी |

सैनिकों को वर्दी में देखा तथा युद्ध का डंका बजते हुए सुनकर उसकी भुजाएँ भी रणक्षेत्र में जाने को फड़कने लगती थी | देश प्रेम की ज्वाला धधकने लगी थी |

जिस दिन स्वतंत्रता संग्राम की आग भड़की थी, तब झलकारी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी | वह उत्तरी बुर्ज पर से भीषण आग उगल रही थी | वह समय-समय पर महिलाओं को प्रेरित करती थी | जब पूरन अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गए तब वह घायल सिंहनी की भाँति अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ती है | जब रानी उत्तर दिशा से होकर निकल जाती है तब रानी को बचाने के लिए एवं अंग्रेजो को धोखे में रखने के लिए अंग्रेजों की छावणी में जाती है | लेकिन दुल्हाजु द्वारा उसका भेद खुल जाता है | फिर भी निर्भयता से अंग्रेजों का सामना करती है | ह्युरोज झलकारी की वीरता से प्रसन्न होकर छोड़ देता है | झलकारी को जीवित बचकर आने की कोई खुशी न थी | दुख था तो केवल झाँसी अंग्रेजों के प्रभुत्व में चली गयी थी | वह पीठ दिखाकर मरना नहीं चाहती थी | लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होने की उसमें ललक थी | जुनून था उसके भीतर | वहीं जुनून उसे चूप बैठने नहीं देता था | उसने फिर से बिखरे हुए लोग-लुगाइन की सेना बनाई | झाँसी को अंग्रेजी सेना से आजाद कराना उसका उद्देश्य था |

'मुक्तिपर्व' में दलित चेतना को उजागर करने का प्रयास किया है | पूरे शहर में आजादी मिलने की चर्चा थी | नवाबसाहब, जमींदार, जागिरदार, दलित सब स्वतंत्र हो गए थे | पर उच्चवर्गीय दलितों को स्वातंत्र्य देना नहीं चाहते थे | वे दलितों को गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं | परंपरा से दलित सवर्णों का अन्याय, अत्याचार सहते आए थे | लेकिन अब देश आजाद हो गया है | बंसी नवाबसाहब की हवेली पर गुलाम था | देश आजाद होने से बंसी नवाबसाहब की गुलामी ठुकरा देता है | बंसी ने गुलामी की जंजीरें कैसे एक झटके में तोड़ डाली थी | बरस-दर-बरस बंसी तथा उसकी जाति के लोग गुलामी भोगते आए थे | आजादी के बाद दलितों की अस्मिता और पहचान उभरने लगी थी | सवर्णों के लिए गुलाम देश ही अच्छा था | वे गुलामी की फौज बनाए रखना चाहते थे | लेकिन देश आजाद होने से कोई किसी का गुलाम नहीं था और कोई किसी का मालिक | दलितों में अब स्वाभिमान का बोध हो रहा है | दलितों में जैसे-जैसे गुलामी का एहसास होता हैं, वैसे-वैसे वे अपनी गुलामी छोड़ रहे है | उनके भीतर चेतना का सूरज

उगने लगा है | वे शिक्षा का मोल समझने लगे हैं एवं शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे हैं |

बंसी के घर में बेटे के जन्म से खुशी का माहौल था | पंड़ित का काम था जन्म लेनेवाले बच्चे का नामकरण संस्कार करना | अज पहली बार पंड़ित दलित बस्ती से निराश लौटा था | उसके ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगा था | पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका दबदबा टूट गया था | धर्म की बिसात उलट गई थी | इसलिए की आज एक पंड़ित बाजी हार गया था और दलित जीत गया था | बंसी ने पंड़ित को घर से बाहर निकाला था | बंसी ने बच्चे का नाम स्वयं रखा था सुनीत | बंसी ने सीधे रूढ़ि-परंपराओं को तिलांजली दी थी | जब सुनीत ने स्कूल जाना शुरू किया तब उसके भीतर प्रौढ़ता उछाल मारने लगी थी | समाज के यथार्थ को उसने बहुत जल्द जान लिया था | सुनीत और बंसी को प्याऊवाले ने नलकी से पानी पिलाने से सुनीत नाराज होता है | वह उसके प्रति विद्रोह करता है | दलितों को अपनी ताकत का एहसास हो गया था | दलितों में विद्रोह और सुधार की प्रक्रिया साथ-साथ चल रही थी | डॉ.अम्बेड़कर जी ने दलितों में नए जीवन का संचार किया था और उनके सपनों को साकार करने का प्रयास किया जा रहा था |

आजादी के बाद दलितों की अस्मिता दहकने लगी थी | वे शिक्षा के माध्यम से समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहे थे | अध्यापक पाण्ड़े सुनीत दलित होने से उपहास करता है | वह जाति का नाम लेकर उसे जलील करता है | भारतीय शिक्षकों के मनपटल से जाति का संस्कार नहीं निकल सका है | जब तक आदर्श शिक्षकों का निर्माण नहीं होगा तब तक भारत का भविष्य भी संदेहजनक है | लेकिन सुनीत मास्टर का जवाब अपने तरिके से देना चाहता है | वह शिक्षा, विवेक एवं बुद्धि के बल पर उसका जवाब देना चाहता है | इसलिए वह कठोर मेहनत करता है | अंतत: सुनीत की मेहनत रंग लाती है | वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी में आता है | वह रिसर्च ट्रेनिंग पुरा करके जाति का सर ऊँचा करना चाहता है, उसके मान-सम्मान को अब तक आघात लगा था, उसका विरोध करना चाहता है | जीवन की लड़ाइयाँ लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है | सुनीत उस शस्त्र के माध्यम से समाज में क्रांति करना चाहता है |

'वीरांगना झलकारी बाई' स्वातंत्रता सेनानियों की श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी है | नैमिशराय जी ने नेतृत्वकुशल दलित नारी एवं दलित समाज की यथार्थता को स्पष्ट किया है | भारतीय सनाज में नारी का शारीरिक एवं मानसिक शोषण चारों ओर से दिखाई देता है | मछरिया जात से भंगी थी | उसने नारायण शास्त्री के साथ अन्तर्जातीय विवाह किया था | यह सीधे-सीधे ब्राह्मण समाज को चुनौती थी | झाँसी के राज ने उन्हें देश से निकालने का आदेश दिया था | लेकिन मछरिया में चेतना जागृत हो गयी थी | वह राजा का विरोध करती है | मछरिया दरबार में दो टूक बेबाक बात कहती है | मल-मूत्र उठानेवाली किसी औरत ने पहली बार राजा की आँखों में आँखें ड़ालकर बात की थी | मछरिया ने सभी के अस्तित्व को एक बारगी झटका दे दिया था | नैमिशराय जो ने नेतृत्वकुशल दलित नारी के रूप में झलकारी को प्रस्तुत किया है | वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेलियों में से एक थी और झाँसी की रक्षा के लिए निस्वार्थ भाव से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | वह भोजला गाँव के एक साधारण कोरी परिवार में पैदा हो गयी थी | लेकिन स्वात्त्र संग्राम में उसने अहं भूमिका निभाई | देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान ने उसने इतिहास में खास जगह बनाई है | दलित सनाज, हिंदी साहित्य जगत एवं भारतीय समाज उसे सदैव याद करेगा, इसमें संदेह नहीं है |

मोहनदास नैमिशराय जी ने दलितों की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है | भारत का मुक्तिपर्व आ गया है | लेकिन सवर्ण दलितों को मुक्ति देना नहीं चाहते थे | दलितों का मुक्तिपर्व कब आएगा | इस बुनियादी समस्या को केंद्र में लाया गया है | सवर्ण देश आजाद होने पर भी दलितों को गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं | वे दलितों को हुक्म के ताबेदार बनाना चाहते हैं | सवर्णों की गंधी मानसिकता को नैमिशराय जी ने प्रस्तुत किया है |

नैमिशराय जी ने शिक्षा समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है | देश आजाद होने पर भी दलितों को शिक्षा लेने से रोका जाता है | सवर्ण अध्यापक दलितों के लड़कों का उपहास करते हैं | उन्हें जाति का नाम लेकर जलील किया जाता है | उनके जख्मों को कुरेदा जाता है | अध्यापक पाण्ड़े सुनीत को मैरिट के आधार पर स्कॉलरशिप फार्म भरने का विरोध करता है | उन्हें शिक्षा के माध्यम से दलितों की प्रगति सुहाती नहीं है | प्राचीन काल से दलितों को मंदिर प्रवेश नकारा गया

है | सवर्ण हिंदू मंदिर में पूजा करते हैं और मुसलमान मस्जीद में खुदा को याद करते हैं | दलित किसको याद करें | दलित किनकी पूजा करें | दलित समाज मजबूर था | उनका बोलना सहन नहीं होता था | बोलने पर उन्हें दंड़ सहन करना पड़ता था | ब्राह्मणों को मंदिर से लाभ ही लाभ थे | यह उनका धार्मिक व्यवसाय था | यह व्यवसाय बारह महिने फलता-फूलता था | धर्म के रक्षक कहनेवाले ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर समाज व्यवस्था को बिगाड़ने का कार्य किया | लेखक ने इस प्रवृत्ति की कटू आलोचना की है |

नैमिशराय जी ने जातीय व्यवस्था पर कड़ी चोट की है | दलितों को प्राकृतिक जल भी नसीब न था | उन्हें नलकी से पानी पिलाया जाता था | दलित समाज के लोग सभी जगह हाशिये पर थे | इस कारण सामाजिक समता की कोई संभावना नहीं है | भारतीय समाज में सवर्ण जातियों के लोगों के पास सुनाने के विशेषाधिकार थे | दलित समाज को सुनना पड़ता था | लोगों की पहचान जाति, कुल, गोत्र से ही होती थी | हिंदू धर्म में दलितों को जातीयता विरासत में मिली थी | सवर्ण दलितों की जातीय अस्मिता और पहचान पर प्रहार करते थे | तथाकथित श्रेष्ठ जाति के लोग उनकी परछाई से भी दूर रहते थे | दलितों को मुख्य मार्ग पर चलने की मनाही थी | उन्हें देखना भी वे अपशकुन मानते थे | उन्होंने हिंदू धर्म की न्याय व्यवस्था की कठोर आलोचना की है | हिंदू धर्मग्रंथों में दलितों को शिक्षा देने की व्यवस्था नहीं थी | दलितों को दंड़ देने की भी कोई सीमा नहीं थी | दलित जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के शिकार थे | उनके लिए हिंदू धर्म में न्याय की नहीं, बल्कि अन्याय की व्यवस्था थी | उन्हें सामाजिक अधिकारों एवं न्याय से दूर रखा गया था |

आजादी के बाद दलित समस्या एक व्यापक रूप धारण कर चुकी थी | वह कम होने की अपेक्षा अधिक तीव्र दिखाई देती थी | मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में दलित जीवन की विवशता अधिक दृष्टिगोचर होती है | नैमिशराय जी ने दलितों की समस्या को अपना कर्तव्य समझकर अपनी लेखनी को मुक्त किया | परिणाम स्वरूप उनके उपन्यासों में दलितों का यथार्थ चित्रण हुआ है |

अत: कह सकते हैं कि समकालीन उपन्यासकारों में नैमिशराय जी का योगदान महत्त्वपूर्ण है | जिस प्रकार समकालीन दलित उपन्यासकारों ने दलितों की यातना, प्रताड़ना को स्पष्ट किया है उसी प्रकार नैमिशराय जी ने भी स्पष्ट किया है | फिर भी अन्य दलित उपन्यासकारों की तुलना में नैमिशराय जी ने दलितों के लिए बहुमोल योगदान दिया है | उनके उपन्यासों में दलित समस्याओं के साथ चेतना भी कुट-कुटकर भरी हुई दिखाई देती है | उनके पात्र विवश होकर किसी के सामने माफी नहीं माँगते, वे किसी की गुलामी नहीं करते | वे अन्याय का संगठित होकर प्रतिकार करते हैं | वह पैतृक व्यवसाय करने क विरोध करते हैं | उनके उपन्यासों पर मार्क्सवाद, गांधीवाद एवं अम्बेड़करवाद का प्रभाव पूरी तरह से परिलक्षित होता है | नैमिशराय अपने उपन्यासों से समाज में परिवर्तन की अपेक्षा करते हैं | कहना सही होगा कि समकालीन उपन्यासकारों की अपेक्षा नैमिशराय आगे हैं | जिससे भारतीय दलित समाज पूरी तरह से लाभान्वित होगा इसमें संदेह नहीं है |

■ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की उपलब्धियॉं -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित उपलब्धियॉं प्राप्त हुई है...

1. मोहनदास नैमिशराय के व्यक्तित्त्व का उनके उपन्यासों पर प्रभाव दिखाई देता है |
2. नैमिशराय जी ने विवेच्य उपन्यासों में दलित जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहराई के साथ एवं सूक्ष्मतम दृष्टि से विवेचन किया है |
3. हिंदी साहित्य के हाशिए में सिमटकर रह गए विषयों को नैमिशराय ने अपने उपन्यासों में केंद्रीयता दी है |
4. स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान में प्रावधान रखने से दलितों में आमुलाग्र बदलाव आया है |
5. नैमिशराय के उपन्यासों में अम्बेड़करवादी विचारधारा को प्रवाहित करने का

प्रयास किया है |

6. नैमिशराय ने दलितो की यातनाएँ,प्रतारनाएँ एवं समस्याओं को अनुभवों के आधार पर स्पष्ट किया है |

7. मोहनदास नैमिशराय उपन्यासों से शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं |

8. नैमिशराय ने दलित नारी में भी वीरता होती है, इसका विस्तृत विवेचन किया है |

अध्ययन की नई दिशाएँ -

1. "मोहनदास नैमिशराय के कथा-साहित्य में दलित चेतना "
2. "मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में प्राप्त सामाजिक यथार्थ "
3. "मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में प्राप्त जातिभेद "
4. "मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में दलित नारी का अध्ययन"

वस्तुत: हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है | मेरा शोध कार्य भी अपनी सीमा में रहकर संपन्न हुआ है | आनेवाले समय में उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य हो सकता है |